*IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSRJHSS)*
*ISSN: 2279-0845 Volume 1, Issue 1 (July-August 2012), PP 71-74*
*www.iosrjournals.org*

# कलम का सिपाही मुंशी प्रेमचंद

## ताहिरा बानों

**व्याख्याता उर्दू**

**राजकीय मीरा कन्या महाविधालय उदयपुर *(राजस्थान )***

**परिचय**

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव मे हुआ। इनकी माता का नाम आनंदी देवी एवं पिता का नाम मुंशी अजायबराय था जो लमही में डाक मुंशी थे 7 वर्ष की अवस्था में उनकी माता का तथा 16 वर्ष की अवस्था में उनके पिता का निधन हो गया। जिस कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्ष में रहा। उनका मूल नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा फारसी में हुई। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। B.A. पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। इनका पहला विवाह उस समय की परंपरा के अनुसार 15 वर्ष की उम्र में हुआ जो सफल नहीं रहा। 1906 में उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया उनकी तीन संताने श्रीपत राय, अमृतराय और कमला देवी श्रीवास्तव हुई। 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी की सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से 23 जून को त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उन्होंने मर्यादा, माधुरी आदि पत्रिकाओं में संपादक के रूप में कार्य किया। उन्होंने हिंदी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। उन्होंने मोहन दयाराम भवानानी की अजंता सिनेटोम कंपनी में कथा लेखक की नौकरी भी की। 1934 में आई फिल्म मजदूर की कहानी प्रेमचंद द्वारा ही लिखी गई है। जीवन के अंतिम दिनों तक वे साहित्यिक सृजन में लगे रहे। निरंतर बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण लंबी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया।

**साहित्यिक परिचय**

उपन्यास सम्राट कहे जाने वाले प्रेमचंद के साहित्य जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था। आरंभ में वह नवाबराय के नाम से उर्दू भाषा में लिखा करते थे। उनकी पहली रचना अप्रकाशित ही रही। इसका जिक्र उन्होंने **पहली रचना** नाम के अपने लेख में किया है। उनका पहला उपलब्ध और उपन्यास असरारे मआबिद है। जिस का हिंदी रूपांतरण **देवस्थान रहस्य** से हुआ। 1907 में उनका पहला कहानी संग्रह **सोजे वतन** प्रकाशित हुआ। देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण इस संग्रह को अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंधित कर इनकी सभी प्रतियां जप्त कर ली और उनके लेखक नवाब राय को भविष्य में लेखक ना करने की चेतावनी दी। जिसके कारण उन्हें नाम बदलकर प्रेमचंद के नाम से लिखना पड़ा उन्हें प्रेमचंद नाम से लिखने का सुझाव देने वाले दया नारायण निगम थे। प्रेमचंद्र नाम से उनकी पहली कहानी **बड़े घर की बेटी जमाना** पत्रिका में प्रकाशित हुई। 1915 में उस समय की प्रसिद्ध हिंदी मासिक पत्रिका **सरस्वती** में पहली बार उनकी कहानी **सौत** नाम से प्रकाशित हुई। 1919 में उनका पहला हिंदी उपन्यास **सेवासदन** प्रकाशित हुआ। इन्होंने लगभग 300 कहानियां तथा डेढ़ दर्जन उपन्यास लिखें। असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद वे पूरी तरह साहित्य सजृन में लग गए। **रंगभूमि** नामक उपन्यास के लिए उन्हें **मंगलप्रसाद पारितोषक** से सम्मानित किया गया। प्रेमचंद की रचनाओं में उस दौर के समाज सुधारक आंदोलन स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आंदोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। उनमें दहेज,अनमोल विवाह,पराधीनता,लगान,छुआछूत जाति-भेद,आधुनिकता,विधवा-विवाह आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है। हिंदी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखंड को **प्रेमचंद युग** कहा जाता है।

**रचनाएं**

प्रेमचंद द्वारा लिखी गई प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं -

1. **उपन्यास** - असरारे मआबिद, हिंदी रूपांतरण - देवस्थान हमखुर्मा व हमसवाब, हिंदी रूपांतरण - प्रेमा रूठी रानी,कर्मभूमि, प्रतिज्ञा गोदान, वरदान तथा मंगलसूत्र।

2. **कहानियां** - प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानियां लिखी। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं - दो बैलों की कथा, पूस की रात, ईदगाह, दो सखियां, नमक का दरोगा, बड़े बाबू, सौत, सुजान भगत, बड़े घर की बेटी, कफन, पंचपरमेश्वर, नशा, परीक्षा, शतरंज का खिलाड़ी, बलिदान, माता का हृदय, मिस पदमा, कजाकी आदि।

3. **कहानी संग्रह** - सोजे वतन, सप्तसरोज, नवनिधि, समरयात्रा, मानसरोवर - आठ भागों में प्रकाशित।

4. **नाटक** - संग्राम, प्रेम की वेदी और कर्बला ।

5. **निबंध** - पुराना जमाना नया जमाना, स्वराज के फायदे, कहानी कला, हिंदू - उर्दू की एकता, उपन्यास, जीवन में साहित्य का स्थान, महाजनी सभ्यता आदि।

6. **अनुवाद** - प्रेमचंद्र एक सफल अनुवादक भी थे, उन्होंने "टॉलस्टॉय की कहानियां"," चांदी की डिबिया"," न्याय" और गल्र्सवर्दी के तीन नाटकों का हड़ताल नाम से अनुवाद किया।

7. **पत्र-पत्रिकाओं का संपादन** - प्रेमचंद ने माधुरी, हंस, जागरण, मर्यादा का संपादन किया।

**भाषा शैली** -

मुंशी प्रेमचंद की भाषा सहज, स्वाभाविक, व्यवहारिक एवं प्रभावशाली है। उर्दू से हिंदी में आने के कारण उनकी भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता मिलती है। उनकी रचनाओं में लोकोक्तियां, मुहावरे एवं सुक्तियों के प्रयोग की प्रचुरता मिलती है।

**साहित्य में स्थान** -

साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है, उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम किया। उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को एक नया मोड़ दिया। आम आदमी को उन्होंने अपनी रचनाओं का विषय बनाया। उनकी रचनाओं में वे नायक हुए जिन्हें भारतीय समाज और अछूत और घृणित समझता था।

उन्होंने अपने प्रगतिशील विचारों को डरता से तर्क देते हुए समाज के सामने प्रस्तुत किया। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए बंगाल के उपन्यासकार शरदचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें **उपन्यास सम्राट** कह कर संबोधित किया। रंगभूमि नामक उपन्यास के लिए उन्हें मंगल प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया तथा उनके पुत्र अमृत राय ने उन्हें **कमल का सिपाही** नाम दिया।

**मुंशी प्रेमचंद - कलम का सिपाही क्यों कहते थे**

कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचंद की जयन्ती हर साल 31 जुलाई को मनाई जाती है. इस दिन उनकी जन्मभूमि लमही में उनके टूटे-फूटे स्मारक में एक समारोह हो जाता है और कई जगह उनके पुराने चित्रों को झाड़-पोंछकर उन पर मालाएं चढ़ा दी जाती हैं. छात्र-छात्राओं को प्रेमचंद पर भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर दिया जाता है और सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त साहित्यकार व साहित्यिक अभिरुचि का दावा करनेवाले राजनीतिज्ञ उन्हें उपन्यास सम्राट तथा कहानी सम्राट का तमगा पहना देते हैं.

प्रेमचंद के देहावसान को इक्यासी वर्ष बीत चुके हैं पर आज भी उनके उपन्यासों और कहानियों के पात्र जीवंत प्रतीत होते हैं. अगर हमको उनकी रचनाओं में से केवल एक पात्र चुनना हो तो हम निश्चित ही 'गोदान' के होरी को चुनेंगे. किसान से खेतिहर मजदूर बना अशिक्षित और दुनियादारी से सर्वथा वंचित होरी आज भी दिन-रात मेहनत करने के बावजूद क़र्ज़ के बोझ तले दबा हुआ है. खेतिहर मजदूर होने की वजह से किसी भी विपदा में उसे सौ-दो सौ के चेक के रूप में कोई सरकारी मदद भी नहीं मिल सकती. उसकी घरवाली धनिया, उसकी बेटियां रूपा और सोना, भगवान न करे, अगर सुन्दर हुई तो ज़रूर कोई न कोई महाजन या किसी ज़मींदार का वंशज उन पर घात लगाये बैठा होगा. फसल अगर ख़राब हो गयी तो उसके पास न तो खाने को रहेगा और न ही कर्जे की किश्त चुकाने को. ऐसे में गले में रस्सी का फन्दा ही उसका एक मात्र सहारा हो जाता

है. हमारे भारत महान में, हमारे शाइनिंग इंडिया में, अनगिनत होरी अपनी करुण गाथा लिखवाने के लिए प्रेमचंद का आवाहन कर रहे हैं –

*हे प्रेमचंद, फिर कलम उठा, नवभारत का उत्थान लिखो, होरी के लाखों पुनर्मरण पर, एक नया गोदान लिखो.*

प्रेमचंद के सुपुत्र श्री अमृत राय ने 'कलम का सिपाही' लिखकर हिंदी-उर्दू भाषियों के साहित्य प्रेम पर एक ज़ोरदार तमाचा जड़ा है. गांधीजी के आवाहन पर शिक्षा विभाग की अपनी अच्छी-खासी नौकरी छोड़कर हमारा कथा सम्राट असहयोग आन्दोलन में भाग लेता है और हमेशा-हमेशा के लिए गरीबी उसका दामन थाम लेती है. उसके बिना कलफ और बिना इस्तरी किये हुए गाढ़े के कुरते के अन्दर से उसकी फटी बनियान झांकती रहती है. उसकी पैर की तकलीफ को देखकर डॉक्टर उसे नर्म चमड़े वाला फ्लेक्स का जूता पहनने को को कहता है पर उसके पास उन्हें खरीदने के लिए सात रुपये नहीं हैं. वो अपने प्रकाशक को एक ख़त लिख कर उसमें विस्तार से अपनी तकलीफ बताकर सात रुपये भेजने की गुज़ारिश करता है. अभावों से जूझता हमारा नायक जब अंतिम यात्रा करता है तो उसे कन्धा देने के लिए दस-बारह प्रशंसक जमा हो जाते हैं. शव यात्रा देखकर कोई पूछता है –

*'कौन था?'*

जवाब मिलता है –

*'कोई मास्टर था.'*

प्रेमचंद हमेशा अपनी रचनाओं और अपने प्रगतिशील पत्रों — 'हंस' तथा 'जागरण' के माध्यम से स्वदेशी, सांप्रदायिक सद्भाव, नारी-उत्थान और दलितोद्धार का सन्देश देते रहे. उनका सम्पूर्ण साहित्य धार्मिक सामाजिक, आर्थिक शोषण, असमानता, अनाचार, भ्रष्टाचार, पाखंड, लिंग भेद, अन्धविश्वास, अकर्मण्यता, आलस्य, जातीय दंभ, बनावटीपन, शेखीखोरी, असहिष्णुता, धर्मान्धता, विलासिता, खोखली देशभक्ति और अवसरवादिता के विरुद्ध संघर्ष है. उन्हें अल्लामा इकबाल का यह शेर बहुत पसंद था –

*'जिस खेत से दहकान को मयस्सर न हो रोटी, उस खेत के हर खेश-ए-गंदुम को जला दो.'*

(जिस खेत से खुद किसान को रोटी नसीब न हो, उस खेत की गेंहू की हर बाली को जला दो)

पर इस शेर का मर्म समझने की हमारे देश के नेताओं को आजतक फुर्सत नहीं है.

प्रेमचंद के उपन्यास 'गबन' का अमर पात्र देवीदीन जो असहयोग आन्दोलन के दौरान अपने दो बेटों की क़ुरबानी दे चुका है, देश के एक भावी कर्णधार से पूछता है कि क्या वो ये नहीं सोचते कि जब अँगरेज़ चले जायेंगे तो इनके बंगलों पर वो खुद क़ब्ज़ा कर लेंगे. नेताजी के हाँ कहने पर देवीदीन सोचने लगता है कि इस आज़ादी की लड़ाई में क़ुरबानी देने से आम आदमी को क्या मिलेगा. आज भी हम उसी देवीदीन की तरह असमंजस की स्थिति में हैं पर अब हमारा खुद से प्रश्न होता है –'क्या हम वाकई आजाद हो गए हैं?'

आज हमको फिर एक नए प्रेमचंद की ज़रुरत है, आज फिर हमको आम आदमी का दर्द समझने वाले कलम के सिपाही की दरकार है, आज फिर 'गबन', 'गोदान', 'निर्मला', 'कर्मभूमि', 'सदगति', 'सवा सेर गेंहू', 'ठाकुर का कुआँ' 'ईदगाह', पूस की रात' 'कफ़न', और 'मन्त्र' लिखे जाने की ज़रुरत है क्योंकि आज भी वही अन्याय और वही अनाचार फल-फूल रहा है जिसके खिलाफ कभी प्रेमचंद ने निर्भीकता से आवाज़ बुलंद की थी.

प्रेमचंद की रचनाएँ तो सीमित हैं किन्तु भारतीय जन-मानस पर उनका प्रभाव असीमित और शाश्वत है. लेकिन आज प्रेमचंद का गुणगान करने के स्थान पर ज़रुरत इस बात की है कि उनका अनुकरण कर हम भी उन्हीं की तरह अन्याय के खिलाफ़ साहस के साथ आवाज़ उठाएं और धर्म के, समाज के , राजनीति के, असंख्य भ्रष्ट ठेकेदारों को बेनकाब कर उनको उनके सही अंजाम तक पहुंचाएं और मजलूमों को, मेहनतकश को, सर्वहारा को, उनका वाजिब हक़ दिलवाएं.

**निष्कर्ष**

मुंशी प्रेमचंद जी को 'कलम के सिपाही', 'कलम के जादूगर' या फिर 'उपन्यास सम्राट' किसी भी नाम से जानिये उनके बारे में आज जो भी जितना चाहे लिखे, वह अत्यल्प होगा। प्रेमचंद जी मेरे पंसदीदा लेखकों में से एक हैं। उनकी कहानी हो या उपन्यास जितनी बार पढ़ती हूं, उतनी बार मुझे उनमें नयापन नजर आता है। प्रेमचंद जयंती के अवसर पर उनके लिए

'हिन्दी साहित्य' में उद्धृत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का कथन समीचीन होगा- "अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार, भाषा-भाव, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा, दुःख-सुख और सूझ-बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद जी से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता। झोपड़ियों से लेकर महलों तक, खोमचे वालों से लेकर बैंकों तक, गांव से लेकर धारा-सभाओं तक आपको इतने कौशलपूर्वक और प्रामाणिक भाव से कोई नहीं ले जा सकता। आप बेखटके प्रेमचंद का हाथ पकड़ कर मेढ़ों पर गाते हुए किसान को, अंतःपुर में मान किए बैठी प्रियतमा को, कोठे पर बैठी हुई वार-वनि-वनिता को, रोटियों के लिए ललकते हुए भिखमंगों को, कूट परामर्श में लीन गोयन्दों को, ईर्ष्या- परायण प्रोफेसरों को, दुर्बल-हृदय बैंकरों को, साहस-परायण चमारिन को, ढ़ोंगी पंडितों को, फरेबी पटवारी को, नीचाशय अमीर को देख सकते हैं और निश्चिन्त होकर विश्वास कर सकते हैं कि जो कुछ आपने देखा, वह गलत नहीं है।"

**सन्दर्भ**


1. रामविलास, शर्मा (2008). *प्रेमचंद और उनका युग* . नई दिल्लीि . राजकमल प्रकाशन : पृ॰ 17. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
2. **कलम के सिपाही –प्रेमचंद [विशेष प्रस्तुति] –अजय यादव**
3. **मुंशी प्रेमचंद "कलम का सिपाही - डॉ रचनासिंह"रश्मि"**
4. **कलम का सिपाही लेखक-अमृतराय प्रकाशनराजकमल प्रकाशन समू) हंस प्रकाशन -**